रिकॉर्ड :– ओम नमः शिवाय। पितु, मात, सहायक, स्वामी, सखा, तुम्हीं सबके रखवारे हो। जिसका कोई आधार नहीं, उसके तुम एक सहारे हो.....
ओम् शांति! ओम का..अर्थ तो बच्चों को समझाया, ओम् शांति माने आत्मा हूँ। अभी ऐसे सभी कहते हैं कि जीव में आत्मा है। ये तो सभी जानते हैं कि सभी आत्माएँ हैं ज़रूर और उन सबका एक बाप है; पर शरीर जो है, उनका अलग–2 बाप हैं। एक बिल्कुल सहज है समझने की बात और बच्चों की बुद्धि में भी ये है कि हद के बाप से वर्सा मिलता है हद का; बेहद के बाप से मिलता है वर्सा बेहद का। अभी इस समय में मनुष्य चाहते हैं विश्व में शांति, ठीक है ना बच्चे! अगर इन चित्रों पर समझाया जाए, तो ये शांति के लिए एकदम ले आना चाहिए फट कि कलहयुग और सतयुग के संगमयुग पर। उनको बता देना चाहिए– देखो, ये है सतयुग, इसको गोल्डन एज कहा जाता है वा नई दुनियाँ कहा जाता है। उनमें तो शांति ही है; क्योंकि पवित्रता भी है। शांति भी है, सुख है; क्योंकि स्वर्ग कहा जाता है इनको, हैविन कहा जाता है। तो मनुष्य तो मानेंगे ज़रूर कि नई दुनियाँ है और बाप ने रची, उनमें दुःख तो कोई हो नहीं सकता। अभी ये समझाना बिल्कुल सहज है। अभी कभी(कब) ये प्राप्त होती है विश्व में शांति? विश्व में शांति कोई सबको तो नहीं प्राप्त होती है; क्योंकि अशांति और शांति की बात उठती है। वो तो है निर्वाणधाम, वाणी से परे धाम, जहाँ शांति–अशांति का क्वेश्चन उठता ही नहीं है। अभी विश्व में शांति समझाना, है तो बड़ी सहज। कभी भी भाषण में या कहाँ भी जब भाषण करती हैं बच्चियाँ इतनी भिन्न–2 जगह में, तो पहले–2 तो विश्व में शांति का ही क्वेश्चन उठाना चाहिए। जबकि प्राइजेज मिल रही हैं शांति वाले मनुष्यों को, जो ये शांति के लिए दौड़ा–दौड़ी करते हैं और अब शांति के लिए कोई दौड़ा–दौड़ी करने की जगह है नहीं– यहाँ जाओ, यहाँ जाओ, वहाँ जाओ, यहाँ जाओ और ये शांति के लिए तो है शांति के बैठना। जो बाप सिखला देते हैं–अपने स्वधर्म में टिको तो विकर्म विनाश हो जाएगा। जब स्वधर्म में टिकेंगे तो शांति भी हो जाएगी और फिर तुम हैं ही एवर शांति के बाप का बच्ची। तो ये वर्सा तो उससे ही मिल सकता है। ....वो कोई मोक्ष है उनको। भगवान को भी मोक्ष नहीं, तो बच्चों को मोक्ष कैसे मिले! क्योंकि भगवान को भी तो आना है। कल्प के संगम युगे–2 मैं आता हूँ। जब–2 सृष्टि का चक्कर फिरता है तो मैं आता हूँ। तो देखो, भगवान को ही पार्ट मिला हुआ है, तो फिर बच्चे कहें कि हमको मोक्ष चाहिए, पार्ट नहीं बजाना, हो कैसे सकते हैं? अभी ये बातें तो जो सारा दिन विचार–सागर–मंथन करते हैं समझाने के लिए; अभी बाप क्यों समझाने के लिए, बहुत करके तुमको ही समझाते हैं। बाहर वालों को तो समझाते ही नहीं हैं। तुम बच्चों की प्रैक्टिस जास्ती है बाप से; क्योंकि शिवबाबा बैठकर समझाते हैं तो सभी ब्राह्मण, ब्रह्मा समेत ब्राह्मण समझते हैं। अच्छा, तो बाप तो साथ में ही है। उनको तो कोई समझाने की दरकार ही नहीं रहती है। समझाने की दरकार है तुम बच्चों को, धारण करना है तुम बच्चों को, विचार–सागर–मंथन करना है तुम बच्चों को; क्योंकि सर्विस पर हो तुम बच्चे सभी। बाबा के पास कभी कोई विरले आएँगे, अच्छी तरह कोई समझ करके। जैसे यहाँ बैठ करके समझाते हैं, कभी बाप समझाते हैं, कभी दादा समझाते हैं। बाकी तुमको तो बहुत समझाना है; क्योंकि दिन और रात सेन्टर पर समझाना ही पड़ता है जो आते हैं। अभी म्यूज़ियम खुलते जाते हैं तो दिन और रात आते ही रहेंगे। रात कोई आधी रात को नहीं आएँगे। दिन और रात, भई सुबह को आठ बजे से रात को आठ बजे तक या सुबह को सात बजे से 12 घण्टा। मैं भी (...), तुम बच्चों को तो सर्विस के लिए 14/15 घण्टा भी हैं;

क्योंकि 10/11 बजे तक भी तुम सर्विस करते हो और सवेल में ही 4 बजे से भी सर्विस करने लग पड़ते हो कहाँ–कहाँ। यहाँ जब घर में हैं तो हम जब चाहें तभी कर सकते हैं। हम चाहें 2 बजे, तो भी कर सकते हैं; हम चाहें रात को 12 बजे बैठे रहें तो भी कर सकते हैं; क्योंकि घर में बैठे हैं। और–2 जगह में तो ऐसे नहीं हो सकता है; क्योंकि बाहर वाले दूर–2 से आते हैं, गलियों से। यहाँ हो तो एक ही घर में हैं। तो तुम यहाँ कोई भी टाइम रखें, तो बच्चे उठ सकते हैं। उठ सकते; परन्तु ऐसा नहीं टाइम रखें, जो बच्चे बिचारे नींद न हो, झुटका बैठ करके खावें, समझ ही न सकें। इसलिए सुबह को किया जाता है– भई सवेल में स्नान–पानी कर–करके, फ्रेश हो करके आवें। तो भी देखो, टाइम पर तो कई नहीं आते हैं, समझे ना! फिर उनको वफादार–फरमानबरदार तो कह ही नहीं सकते हैं। बाप को सपूत और कपूत बच्चे तो होते ही हैं।...सो बेहद के बाप को भी कपूत और सपूत बच्चे तो होएँगे ज़रूर। सपूत बच्चे बादशाह बनेंगे; कपूत बच्चे जा करके झाड़ू साफ करेंगे कुछ–न–कुछ। तो कपूत और सपूत का पता तो यहाँ झट पड़ जाता है।...बाहर से भी आते हैं, तो ब्राह्मणियाँ भी समझाती हैं सब– ये आते हैं, नहीं आते हैं, कितने (...), बाबा रजिस्टर भी देखते हैं ना! अच्छा, आज जो तुमको समझाना ही था ये कृष्ण जन्माष्टमी पर। रात को भी थोड़ा समझाया। अभी फिर समझाया जाता है कि जब कृष्ण का जन्म है तो वैकुण्ठ है, स्वर्ग है और एक ही राज्य है और विश्व में शांति भी है। ये भी तो समझाय सकते हो, जब श्रीकृष्ण का जन्म होता है तो होता ही है स्वर्ग में। अच्छा, स्वर्ग में तो बहुत ही थोड़े मनुष्य होंगे और उसमें भी सतयुग जो होगा नई दुनियाँ, उनमें तो शांति–2 होगी; उसमें अशांति तो हो ही नहीं सकती है। तो ये तो समझना चाहिए कि शांति है जब एक धर्म है। सतयुग में नया धर्म जो बाप स्थापन करते हैं। पीछे जो धर्म आते हैं तो मनुष्य वृद्धि को पाय लेते हैं, पीछे तो अशांति ज़रूर होगी। अशांति तो अगर कहें, हिसाब करें तो शांति तो है जबकि 16 कला संपूर्ण हैं। चंद्रमा भी देखो कितना शोभता है! फुल मून उसको कहा जाता है। अच्छा, फिर जब त्रेता होती है, फुल मून तो नहीं कहेंगे; वो तो थ्री/फोर्थ कहेंगे मून का। तो खण्डन हो गया, तो सब चीज़ का खण्डन हो, कला कमती हो गई ना! अगर वो कहें कि बिल्कुल शांति हो, एब्सल्यूटली शांति हो, तो ये तो समझा जाए कि सतयुग में फिर भी तो अच्छा समय होगा। 25 परसेन्ट पुरानी होगी तो कुछ–न–कुछ, जैसे कहा जाता है आटे में लून कुछ–न–कुछ खिटकिट होगी ना; क्योंकि दो कला कम हो गई। शोभा तो निकल गई। तो जहाँ शोभा निकल गई उसको स्वर्ग तो नहीं कहें ना बच्चे। नहीं। स्वर्ग, स्वर्ग और नर्क। नर्क भी कहा जाता है जबकि बिल्कुल यहाँ अशांत हो; स्वर्ग कहा जाए, बिल्कुल ही शांत हो। तो इसलिए भेंट की जाती है कलहयुग और सतयुग की और गाया भी इस समय में जाता है– बिल्कुल ही अशांत और यही समय है जो मनुष्य विश्व में शांति चाहते हैं। ये अभी आवाज़ और स्लोगन्स निकले हुए हैं; नहीं तो कोई इसके आगे 100/200 बरस ये आवाज़ नहीं निकलता था कि विश्व में शांति हो, विश्व में शांति हो। ये अभी निकला है। क्यों अभी निकला है? कि विश्व में शांति स्थापन हो रही है। उस समय में समझते हैं कि विश्व में शांति हो, विश्व में शांति हो; क्योंकि मनुष्य तो देहअभिमानी हैं ना! आत्माएँ अगर हों, तो फिर वो आत्माएँ तो चाहती हैं ना– विश्व में शांति होनी चाहिए; क्योंकि आत्माएँ जानती हैं कि बरोबर विश्व में शांति थी। ऐसे थोड़े ही यहाँ न थी; परन्तु मनुष्य (...), अभी तुम जानते हो, तुमको समझाया जाता है कि देहअभिमान होने कारण ये विश्व में शांति, विश्व में शांति, विश्व में शांति कहाँ हो। आत्माएँ तो जानती हैं ना! वो तो समझती हैं ना कि विश्व में शांति होने का

समय आ गया है। जन्म भी भोग चुके हैं। अभी ये आ करके बाप सिर्फ समझाते हैं। आपे ही किसको ये ज्ञान नहीं आता है। तो बाप के लिए ही सभी याद करते हैं, तरस ठहर रहे हैं– कब आएगा बाप, किस रूप में आएगा! आएगा तो ज़रूर आ करके विश्व में शांति ही फैलाएगा और बाप आएगा तो आ करके विश्व में स्वर्ग की स्थापना करेगा, हैविन की; क्योंकि नाम ही उनका हैविनली गॉडफादर। अभी ये तो मनुष्यों बिचारों को किसको भी मालूम न है– ये कृष्ण, ये हैविन का शहज़ादा है। हैविन का इसको मनुष्य भी तो नहीं कहेंगे; क्योंकि दैवीगुण धारण किए हुए; इसलिए इनको देवता कहा जाता है। इनको मनुष्य नहीं कहेंगे; क्योंकि मनुष्य देवताओं को नमन करते हैं। है भले मनुष्य; पर दैवीगुण वाला है, इसलिए इनको देवता कहा जाता है। कोई अच्छा मनुष्य होता है, तो अगर देखता है कि अच्छे गुण इनमें हैं तो कहते हैं– ये तो जैसे देवता है। और देखें– नहीं, ये तो भौंक–2 करते हैं, लड़ते हैं, ये तो बोले जैसे असुर। ये तो नाम प्रसिद्ध है बिल्कुल अच्छी तरह से। जो–2 दैवी चलन चलते हैं उनको कहेगा–देवता। जो आसुरी चलन रहेंगे, लटकते–झटकते.... तो उनको क्या कहेंगे? उसको कहेंगे–ये आसुरी सम्प्रदाय है। बाप भी तो ऐसे ही कहेंगे, बोलेंगे– ये आपस में कोई लड़ते हैं, झगड़ते हैं, ये आसुरी सम्प्रदाय है। इनमें दैवीगुण हैं नहीं; क्योंकि ये बाप अभी बैठा है ना बेहद का। वो तो समझाके कहते हैं ना! वो तो बाप कुछ समझते नहीं हैं ना। ये बाप को जानते हैं बच्चे कि हम बेहद के बाप के सामने बैठे हुए हैं। है ना! तो भले बेहद के बाप के सामने बैठे हुए हैं; पर चलन तो किनकी वही पुरानी है ना। ...बाप समझाया कि कई घर ऐसे होते हैं रॉयल, जिसमें कोई भी हंगामा, खिटखिट, लड़ाई–झगड़ा, 6–6/7–7 कुटुम्ब इकट्ठा रहते हैं, बाबा के देखे हुए, बिल्कुल जैसे खीर–खण्ड। कहाँ देखो एक कुटुम्ब है तो भी खीर–खण्ड नहीं। बस लड़ाई–झगड़ा। चलो दो आपस में होगा ना सिर्फ, वो कुटुम्ब भी नहीं कहेंगे। कुटुम्ब कहें जब बाल–बच्चे भी हों। दो होगा ना सिर्फ, वो भी आपस में लड़ते–झड़ते हैं, ... नहीं करेंगे; परन्तु सतयुग में तो ऐसा नहीं होगा ना। सतयुग में एक तो बहुत कुटुम्ब बड़ा नहीं होता है और होते ही दो बच्चे हैं, वो लॉ के मुजीब; क्योंकि ईश्वरीय संतान हैं। तुम ईश्वरीय संतान हो ना! तुम्हारे में तो झगड़ा–वगड़ा नहीं होना चाहिए ना, बिल्कुल ही; परन्तु नहीं, होते हैं। तो फिर बाप समझते हैं– ये भी जैसे जंगली कुत्ते–बिल्ले हैं, आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं। ये तो समझा जाता है ना; क्योंकि दो मनुष्य आपे ही समझाते रहते हैं कि सतयुग में ये खीर–पानी होते हैं और यहाँ तो ईश्वरीय सम्प्रदाय में सीखते हैं खीर–पानी बनने के लिए। तो खीर–पानी, खीर–पानी क्या बोलता हूँ? (किसी ने कहा–खीर–खण्ड) खीर–खण्ड तो प्यार चाहिए और यहाँ तो ऐसे बाप के घर में भी, जब बाप के घर में ही प्यार, प्रेम–प्यार नहीं है, लून–पानी हो पड़ते हैं। तो जहाँ बाप नहीं है और बच्चियाँ समझाते हैं, वहाँ तो होता ही होगा ज़रूर।..जब तलक कि ये समझ करके खीर–खण्ड होने लायक बनें, ऊँच पद पाने का लायक बनें। सो तो बच्चे, बाबा कहते हैं ना– अंदर में जाँचों रात को, तो हमने कोई आज कोई विकर्म तो नहीं किया है, कोई को दुख न दिया है या अपनी दिल को तो नहीं दुखाया किसको दुख दे करके? तो ऐसे तो किसको प्रैक्टिस भी नहीं है। भले बाप समझाते हैं, तो ऐसे कोई बैठ करके रात को जाँचते हैं क्या अपने अंदर में? तो बड़ी समझ की बात भी होती है; पर वण्डर ये लगते हैं कि जो बाप के पास रहते हैं और वहाँ अगर झगड़ा हो, तो देखो फिर बाहर में कितना न होगा! नहीं तो झगड़ा तो नहीं होना चाहिए ना; शांति होनी चाहिए; क्योंकि तुम हैं विश्व में शांति स्थापन करने वाले। अभी घर में ही स्थापन अशांति करने वाले होंगे तो वो निमित्त कैसे बनेंगे

शांति स्थापन करने के लिए! तो और ही विघ्न लायक हो जाते हैं। तभी फिर बाप कहते हैं– नहीं, ये तो मुये भले अच्छे, नहीं जन्म लेता तो अच्छा था। ऐसे कहते हैं ना घरों में भी। कोई भी बहुत तंग करते हैं कोई, तो बोलता– ये न जन्म लेते तो अच्छे थे। नहीं तो शांति के स्थापन करने वाले के बच्चे हैं, शिवबाबा के बच्चे हैं ना! अगर कोई अशांत होती है, किस कारण होती है, आके शिवबाबा को (...); क्योंकि वो तो, वो तो हिरे हैं ना, शांति स्थापन करने के लिए। हाँ उनके पास आने से वो झट उनको युक्ति बताएँगे, भई हाँ ऐसे शांत हो सकती है। तो शांत हो जाएगी। बाबा के पास युक्ति तो सब हैं ना! तो उनको शांत का प्रबंध कर–करके देवें जिसमें वो अशांत न होवे; परन्तु बाबा के, शिवबाबा के पास ही नहीं आते हैं; क्योंकि उनको ये भी मालूम नहीं है कि इस ब्रह्मा के तन में कोई शिवबाबा की प्रवेशता है, वो भी उनको मालूम नहीं है। तो जैसे कि बाहर के आ करके फँसे हुए हैं बिचारे। ऐसे हुआ भी है ना, बहुत बिचारे छोटे इतने आए, इतने आए, बड़े आए, कोई पेट में आए, छोटे आए, अभी वो क्या मालूम कि इस घराने का है या आसुरी घराने का है! तो देखो आए, फिर जो आसुरी घराने के थे सो निकल गए; जो ईश्वरीय घराने के थे सो रह गए और बाकी भी कुछ–न–कुछ हैं.., जिसको आसुरी घराने के ही कहेंगे। ये कोई दैवी घराने का नहीं है, इनकी चलन दैवी घराने जैसी नहीं है। समझा ना! जैसे उनमें से बांस आती है छी–छी। तो ये दुनियाँ में विश्व में शांति; अभी विश्व में शांति, हम तो कहते हैं 'विश्व में शांति', ये भी कहते, ये भी कहते, सब कहेंगे– विश्व में शांति। विश्व में शांति तो हम 9 बरस में श्रीमत पर स्थापन कर रहे हैं। परन्तु कोई पूछे– तुम्हारे में शांति है? बाबा से आके पूछे– भला तुम्हारे इन बच्चों सबमें शांति है? हम बोलेगा– नहीं। हम झूठ थोड़े ही बोलेंगे। वो कहेंगे– नहीं; क्योंकि, उसको फिर समझाएगा– तुम कैसे समझते हो– विश्व में शांति? विश्व में शांति तो नई दुनियाँ में होगी ना; यहाँ तो नहीं होगी ना! विश्व में शांति होगी ही न्यू वर्ल्ड में। इसमें संगमयुग पर शांति तो हो नहीं सकती, उसमें तो शांति बनने का पुरुषार्थ करते हैं। पीछे अगर शांत न बनेंगे तो फिर सज़ा खाते हैं। देखो बच्चे भी घर में हैं माँ–बाप के, अगर शांति नहीं करते तो थप्पड़ मारते हैं। ठीक है बरोबर! यहाँ बाप समझाते हैं– मैं थप्पड़ कैसे मारूँगा, ये फिर सीख जाएँगे! नहीं, मेरे पास फिर धर्मराज है। जब वो समय आएगा ना, हिसाब–किताब चुक्तू करने का, कयामत का समय, तब वो खूब मार खाएँगे एकदम, खूब सज़ा भोगेंगे। अभी कर्म का भोग ये तो तुम समझते हो कि है ज़रूर। घर में भी है, यहाँ भी है। कितने बीमार हो जाते हैं। फिर उनको क्या कहेंगे! भई ये है कर्म का भोग; क्योंकि वो कर्म ऐसे किए हुए हैं जो भोगने ही पड़े। बाबा को देखो कितने लिखते हैं चिट्ठी में– बाबा, ये हमको मारते हैं; बाबा, ये ऐसे करते हैं। बच्ची, ये तुम्हारे कर्म का (भोग)। बाबा, हम देवाला मारा है; बाबा, हम बीमार हो गया है। बाबा के पास तो चिट्ठियाँ बहुत आती हैं ना! बाबा, हम बीमार हो गया है; बाबा, हम दुःखी होके आया है; बाबा, हमको बच्चे बहुत दुखी करते हैं। रोज़ चिट्ठियाँ आती ही हैं कम्प्लेन्ट की। अभी बाप तो नहीं किसको कहेंगे ना। बाप के ऊपर कोई दूसरा है? ये तो बाप को लिख भेजते हैं। ये बाप तो किसको बोलें? तो इनको सब–कुछ सहन करना पड़ता है; क्योंकि वो समझा देते हैं, नहीं तो सज़ाएँ बहुत खाएँगे, बाबा कह देते हैं। बाबा तो किसको रिपोर्ट नहीं देंगे ना। है कोई बाबा के ऊपर कोई? नहीं। बाबा समझाते हैं– बच्चे, गुलगुल बनो, अच्छी तरह से बनो, तो फिर ऊँचे पद पाएँगे। नहीं तो कोई भी फायदा तो हुआ ही ना। भगवान मिला, जिसको आधाकल्प याद किया और वो भगवान आया और उनसे भगवान से पूरा बाप से वर्सा न लिया, तो वो बच्चे क्या काम के! परन्तु ड्रामा के

प्लैन अनुसार बनते हैं ज़रूर। वो भी देखने में आते हैं, बनना है ज़रूर, बनते हैं ज़रूर ऐसे। तो ये समझानी, ये तो समझानी बाप को देते हैं। देखो बाबा का आज समझानी के ऊपर ही चला गया है। बाप वहाँ तो शिवबाबा के, कृष्ण की जन्माष्टमी के लिए रात को समझाया है, तो उस समय में प्रेरणा आई, जो समझा देवें, सुबह को उनको समाचार भेज देवें– भई कैसे समझाओ। पर समझाने का तो बहुत ही युक्तियाँ हैं, कोई एक युक्ति थोड़े ही है। बाबा ने आते ही कहा, कहा देखो विश्व में शांति; अच्छा कृष्ण का फिर से जन्म; चलो भला देखो ना– अभी कलहयुग का अंत है, ये कृष्ण आ रहा है, ज़रूर लड़ाई लगेगी ना; क्योंकि अशांति भी है, बहुत धर्म भी हैं। तो कृष्ण तो आ रहे हैं ना! अभी लड़ाई है तो कृष्ण आएँगे ना। सतयुग में आएँगे, और कोई जगह में थोड़े ही आएँगे कृष्ण। कृष्ण, वो कहा जाता है ना बच्ची– देवताओं का पाछा(परछाई) इस कलहयुग में धरती पर यानी वो खड़ा रहे और पाछा पड़े, वो हो नहीं सकते हैं। अभी साक्षात्कार भी करें तो भी पाछा थोड़े ही पड़ सकते हैं, कोई भी नहीं। देखो, जैसे हम लोग मँगाते थे नारायण को, लक्ष्मी को, मँगाते थे ना! पीछे उनका पाछा थोड़े ही पड़ता था। पाछा तो उन दूसरे शरीर का पड़ता था जो साक्षात्कार करते थे। ऐसे तो नाटक जभी करते हैं, लक्ष्मी–नारायण बनाते हैं, तब तो उनका पाछा पड़ता। वो सच्च–पच्च थोड़े ही हैं लक्ष्मी–नारायण। सच्चे–पच्चे का तो पाछा पड़ ही नहीं सकते हैं, बाकी आर्टीफिशियल का तो बहुत ही पड़ सकता है। देखो, इनका पाछा पड़ सकता है। इनको बाहर में, मंदिर से बाहर में निकालो, तो देखो इनका पाछा पड़ेगा; पर ये तो जड़ हैं ना! चैतन्य का तो पाछा नहीं इस सृष्टि पर पड़ सकेगा ना। तो ये सभी बातें तुम बच्चे सुन रहे हो। किससे सुन रहे हो? ये जानते हो कि शिवबाबा हमको भिन्न–2 रीति से पढ़ाके–2, समझाके, ताड़ना करते–2 सारी आयु लग जाती है। बुड्ढे बाप बन जाते हैं, मरने तक भी। कई ऐसे उनके कुटुम्बी होते हैं, जो बोलते हैं– भई हम तो सारी उम्र इनको समझाए, ये समझते ही नहीं हैं। ऐसे कहते हैं ना बुड्ढे–2, जो तंग हो जाते हैं बुड्ढेपन में। शुरू से ही इनने तंग किया है, पिछाड़ी तक, मरने का समय आया तभी भी ये बच्चे, ये छोकरे तंग करते ही रहते हैं। तो ये बाप भी ऐसा ही कहते हैं। ऐसे ही है जैसे वो बाप तंग हो करके जाते हैं। बाप तो कहते ही हैं ना! वो बोलता है– हम भी इनको समझाते–2 तंग हो जाते हैं और समझ ही नहीं सकते हैं, कितना समझाते हैं। तो जैसे लौकिक बाप की एक्टीविटी तैसे फिर परलौकिक बाप की भी एक्टीविटी; क्योंकि बाप तो हैं ना! एक्टीविटी तो चाहिए ना। उनकी हद की एक्टीविटी तो इनकी बेहद की एक्टीविटी। ये बेहद में बच्चों को भी समझाते हैं; क्योंकि पढ़ाई भी इनको करानी पड़ती है। तो ये पढ़ावें अच्छी तरह से, तो इनको समझाया जाता– पढ़ाओ अच्छी तरह से। एक तो बड़ी बात समझाओ कि भई ज्ञान अलग चीज़ है, भक्ति अलग चीज़ है। भक्ति को ज्ञान नहीं कहा जाता, ज्ञान को भक्ति नहीं कहा जाता। देखो सतयुग और त्रेता में भक्ति होती ही नहीं है और फिर द्वापर और कलहयुग से भक्ति; क्योंकि हाफ समय में है भक्ति और ज्ञान। गाया भी जाता है–दिन और रात। जैसे दिन और रात वैसे भक्ति और ज्ञान। अभी समझाते बहुत हैं संन्यासी वगैरह; परन्तु वो तो समझा ही पूरा नहीं सकते हैं कि ज्ञान...दिन, तो कल्प की आयु रख दी है उल्टी–सुल्टी। उसमें आधा–उधी हो ही नहीं सकते हैं। तो बिचारे मनुष्य कुछ नहीं समझते हैं। और ही शास्त्र वगैरह सुन करके बुद्धि गिद्द गई है, गिद्द। छेना पड़ गया ना, भूसा। इससे जो आती हैं नई कोई ..., वो बोलती हैं– हम शास्त्र भी नहीं पढ़े हैं, हम स्कूल में भी नहीं पढ़े हैं। बाबा कहते हैं अच्छा हुआ जो तुम्हारी बुद्धि में ये भूसा नहीं पड़ा हुआ है। है ना! क्योंकि नहीं तो संशय उठेगा, प्रश्न उठेंगे पढ़े

हुए। ये प्रश्न तो नहीं उठा सकती हैं ना। पढ़ी–लिखी नहीं हैं तो प्रश्न क्या उठाएँगी! तो उनके लिए बहुत सहज है समझाना बैठ करके। अगर कोई पढ़ी हुई है तो स्कूल में पढ़ी हुई है, सो तो कोई भक्तिमार्ग में गई नहीं है अभी। क्यों(कि) कुमारियाँ और ये सभी छोटे बच्चे कोई भक्तिमार्ग में नहीं जाते हैं, वो तो पढ़ाई पढ़ने में लग जाते हैं। वास्तव में भक्ति की जाती है जब वानप्रस्थ अवस्था आती है। तभी संग चाहिए कोई भगत का, जो फिर वो भक्ति सिखलावे। नहीं तो ऐसे हो नहीं सकते हैं– भक्ति भी करे और धंधा भी करे। नहीं। भक्ति, देखो भक्ति से होती है दुर्गति। अभी दुर्गति के लिए भगवान को पुकारने का होता है। तो देखो मनुष्य, भगवान के पास जाने का समय है ये वानप्रस्थ, जब अवस्था होती है, तभी कोई समय में भी जा करके शरीर छोड़ेंगे। तो उस समय में आ करके भगत भगवान को याद करते हैं। भगत भगवान को याद करते हैं मत से कोई के। तो देखो ये मनुष्य धंधा–धोरी छोड़ पीछे लगते हैं भक्ति से। पीछे भगत कुछ भी सिखलावे, संन्यासी कुछ भी सिखलावे, अपने साथ यात्रा को ले जावे, किसका भी सिखलाए, जैसा–2 फिर वो गुरू, भगत, तैसा–2 उनको सिखलाएगा। तो भक्ति भी तो सिखलाते हैं ना! ऐसा कोई भी नहीं है जो भक्ति न सिखलाता हो। क्योंकि कोई न हो, भाई अच्छा (.. .), बस ऊँचे–ते–ऊँचा भगत कौन होगा? भई अच्छा शंकराचार्य, और क्या, इनसे ऊँचा कौन होगा? कोई ने तो भक्ति स्थापन की ना बच्चे! तो भक्तों ने भक्ति स्थापन की, तो नंबर वन में कहेंगे–शंकराचार्य; क्योंकि उनके बाद में ये भक्ति शुरू हो गए हद यहाँ। अच्छा, वो भी तो भगत ही है। अभी तुम बच्चों को सिद्ध हुआ। आगे नहीं सिद्ध होता था। जब देखा कि ये भगत शंकराचार्य भी भक्ति करते हैं, जो भक्ति करते हैं तो ज़रूर पुजारी है, पूज्य हो नहीं सकते हैं। एक भी की तो भक्ति करने वाला, पूजा करने वाले को पुजारी ज़रूर कहेंगे। तो वो तो सिद्ध हो गया तुम बच्चों के आगे। तो ये तो देखो, ये कभी बात भी नहीं करेंगी; क्योंकि वो समझते हैं ये बैठ करके हमारे से आरग्यू करेंगे। हम ऐसे बड़े–2 पण्डितों से और ये क्या हमारे से बात करेंगे! इसीलिए उनको बात करने का वो नहीं होता है। हाँ, करेंगे बात, वो समय आने वाले हैं जब तुम बच्चे भी, तुम बच्चों में भी वो ताकत आएगी। इनमें भक्ति की तो ताकत है ना बच्ची। भक्ति की ताकत है तब तो इतने फालोअर्स हैं ना, भगत। जो भक्ति करते हैं, उनके फालोअर्स को भी भगत कहेंगे ना बच्चे, पुजारी कहेंगे ना। तो शंकराचार्य भी पुजारी ठहरा ना! तो जो भगत फालोअर्स होगा, वो भी तो पुजारी होगा ना। तो देखो वो भी उनके ठीक पुजारी नहीं हैं। क्यों? वो शिव की पूजा करेंगे तो दूसरा आ करके और–2 पूजा करेंगे। ऐसे नहीं है कि उनके सभी फालोअर्स होगा, कोई शिव की पूजा करते होंगे। कभी भी नहीं हो सकते हैं। कोई किसकी, कोई किसकी। तो उसमें भी ये फालोअर नहीं हो सकते हैं, सब झूठ। फिर बाबा कहें ये भी सभी झूठ; क्योंकि जो भी उनके फालोअर्स हैं उनसे भी पूछना चाहिए कि क्या आप भी शिव की भक्ति करते हो, पूजा करते हो? तो जो पूजा करते हो वो पुजारी हो ना, तुमको पूज्य तो कह ही नहीं सकते हैं। या पूज्य होना है या पुजारी। तो देखो, यहाँ सब पुजारी और वहाँ कोई भी पुजारी नहीं। देखो, पूज्य और पुजारी। आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी; पर कैसे? भगवान तो पुजारी नहीं बनते हैं ना बच्चे! तो ये सभी कितनी–2 अनेक ढेर–के–ढेर प्वॉइंट्स तुम बच्चों को समझाई जाती हैं। जभी–2 बड़े दिन होते हैं तभी भी समझाया जाता है। कृष्ण आ रहा है– जो तुम लोग लिखा हुआ है, वो तो उनको बताओ– देखो, कृष्ण आएगा ना। सतयुग में तो कृष्ण फिर होगा ज़रूर, वर्ल्ड की हिस्ट्री–जाग्रफी कैसे फिरेगी? पहले–2 नई ... में ज़रूर आएगा और फिर वो पुरानी दुनियाँ में जैसे कहाँ वो तमोप्रधान हो जाते हैं। तो

सिर्फ एक कृष्ण थोड़े ही है। नहीं, यथा राजा–रानी तथा प्रजा। उनमें भी देखो समझ बहुत है। श्रीकृष्ण पुरी में भी सब कोई 84 जन्म नहीं लेंगे। है ना! ये भी तो हिसाब है ना कि 100 बरस; ये तो, ये तो, ये तो 1250 बरस हैं ना। 100 बरस, 150 बरस की आयु तो होती है ना बच्चे। फिर ज़रूर वो आयु खलास हुई, एक बरस, एक आयु तो कम हो गई ना! तो 84 आयु, तो 83 आयु भी तो वो आने वाले होंगे, 82 भी आने वाले होंगे। 1250 तो 1200 बरस भी, 12 सदियाँ भी तो कम हो जाएँगी ना उनमें। कि एक/दो के पीछे आएँगे। कोई 84, तो कोई 83, 12 कम हो जावें(गे)। है ना! 84,83,82,81,80 ऐसे भी चले जाएँगे, नीचे में आते हैं। अगर पूरा 84 जन्म तो तो फिर कृष्ण ही कहेंगे ज़रूर और उनके साथ जो रहने वाले होंगे। तो वो भी टाइम बहुत लगता है ना बच्ची, 150 बरस की तो आयु होती है, हाँ। तो इस हिसाब से कहेंगे कि नहीं, सिर्फ कृष्ण एकदम पूरा 84 का (...)। तो मुख्य को पकड़ना चाहिए ना। फिर एक तो नहीं होगा ना। कभी एक मनुष्य हो जाते हैं? नहीं, उनके साथ फिर ज़रूर दूसरे भी होंगे। फिर कितने होंगे, ये नहीं कह सकते हैं फिर कितने होंगे। तो ये भी सब तुम सुन रहे हो मनुष्यों के जन्म, बुद्धि में तो 84 लाख जन्म हैं और उनको बताना ज़रूर चाहिए झट कि कृष्ण आ रहे हैं। ये आगे चल कर–करके बहुतों का आवाज़ निकलेगा कि बरोबर लड़ाई ये होती है। ये दुनियाँ पुरानी है सो नई होने की है ज़रूर; क्योंकि नई थी। उनमें सिर्फ एक आदि सनातन देवी–देवता (धर्म) था, जिनको ही स्वर्ग कहा जाता है। अभी ये तो बिल्कुल सहज है ना। तुम बच्चों की बुद्धि में तो रात–दिन यही, बस अभी गए, स्वर्ग में गए कि गए और सारा–2 चक्कर बच्चों को मालूम है और दुनियाँ में बिल्कुल कुछ भी नहीं देखो जानते हैं। इसलिए बाप ने क्यों आ करके कहा है– भगवानुवाच, देखो ये सभी अंधे की औलाद अंधे। अभी ये अपने बच्चों के लिए तो नहीं कहेंगे ना! तो ये हैं धृतराष्ट्र के बच्चे; ये हैं युधिष्ठिर के बच्चे। युधिष्ठिर किसको कहा जाता है? हाँ, युधिष्ठिर किसको कहा जाता है? ये बताओ, युधिष्ठिर किसका नाम है? (किसी ने कहा–धर्मराज) नहीं, युधिष्ठिर है ब्रह्मा का नाम। समझा ना! क्योंकि युद्ध के मैदान में तो ये है ना– अंधे की औलाद।... अंधे तो शिव को नहीं कहेंगे ना। अंधे तो मनुष्य को कहेंगे ना। तो मनुष्य के अंधे के औलाद अंधे। तो फिर मनुष्य सज्जे के, तो मनुष्य आना चाहिए ना यहाँ! तो धृतराष्ट्र भी अंधे को कहेंगे, तो युधिष्ठिर फिर ये ब्रह्मा को कहेंगे। तो ब्रह्मा को युधिष्ठिर भी कहते हैं ना बच्चे; क्योंकि औलाद हो ना बच्ची! उसको जो है, उसको औलाद नहीं कहेंगे। नहीं, औलाद कहा ही जाता है जब किसका जन्म होता है। आत्माएँ औलाद थोड़े ही कहेंगे हैं। नहीं, वो तो अनादि बच्चे हैं ही हैं। समझे ना! उसको 'औलाद' अक्षर भी नहीं दे सकेंगे। हम कहेंगे हम शिवबाबा के बच्चे हैं; क्योंकि अनादि हैं, कोई नया पैदा तो नहीं हो ना औलाद। तुमको औलाद कहेंगे। अगर तुमको औलाद कहेंगे तो शिवबाबा के बच्चों (को) औलाद थोड़े ही कहेंगे। ना! ये 'औलाद' अक्षर गृहस्थी अक्षर है जैसे। वो तो सभी भाई–2 हैं आपस में और ये जानते हो कि वो तो हैं ही हैं उनका और ये तो मुखवंशावली, न ऐसे कहते हैं। उसको मुखवंशावली भी नहीं कहेंगे जो औलाद कह सकें। वो तो अनादि हैं ही हैं, शिवबाबा के बच्चे हैं ही हैं। तो ये भी दुनियाँ को तो मालूम नहीं है ना! वो तो हैं ही हैं, कहते ही नहीं हैं। दूसरे तो– भगवान ही भगवान हैं सब और तुम बच्चे तो अच्छी तरह से समझते हो कि हम बाप के बच्चे हैं। ये सब जो भी दुनियाँ है, उसमें जो भी मनुष्यमात्र हैं, अभी ऐसे नहीं कहेंगे कि जनावर भी बाप के बच्चे हैं। ना। ये बाप के बच्चे हैं, सभी बाप के बच्चे हैं। अभी सभी को सुख चाहिए। न कभी सभी स्वर्ग में आ सकते हैं, न सभी त्रेता में आ सकते हैं, न सभी

द्वापर में आ सकते। ये जो युग बने हैं, उनमें भी तो वृद्धि को पाएँगे ना और फिर झाड़ है, सो भी तो वृद्धि को तो ज़रूर पाएँगे ना! तो देखो, झाड़ कैसे होते हैं। बाप द्वारा पहले ब्रह्मा (...)। अच्छा, मनुष्य–सृष्टि का झाड़ चाहिए ना। वो जो आत्माओं का झाड़, तो वो तो यहाँ नहीं होता है ना! आत्माओं का झाड़ वहाँ, ये मनुष्य–सृष्टि का झाड़ यहाँ। उनकी कैसे उत्पत्ति होती है, पालना होती है, प्रलय होती है, वो तो इसमें लिखा ही हुआ है– ब्रह्मा द्वारा उत्पत्ति और फिर विनाश उनका, पीछे चाहिए। पहले स्थापना, फिर पालना नहीं कहना चाहिए। नहीं, पहले स्थापना, पीछे विनाश, पीछे पालना। अगर पहले स्थापना और फिर विनाश कह दिया तो रॉंग हो जाते हो। तो ये सभी समझ की बात है। बच्चों को बुद्धि में सारा दिन ये ज्ञान नशा चढ़ा हुआ है कि सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है। बस। सारी दुनियाँ का नाम ही है कि सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है, रचना का चक्कर कैसे फिरते हैं; क्योंकि अभी नई रचना है ना चोटी। तो चक्कर तो बिल्कुल तुम बच्चे समझ गए, चोटी ये–2 जैसे बाजोली का चक्कर। ये तो तुमको वहाँ सभा में भी बता देना चाहिए, बाजोली कोई को पहनाय करके। देखो ये एक बाजोली है ना सृष्टि का चक्कर! ब्राह्मण पहले, पहले शूद्र हैं, अनेक हैं शूद्र। सब शूद्र ही शूद्र एकदम। पीछे बाप जब आते हैं तो रचना रचते हैं, तो रचना रचते हैं ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों की। तो ब्राह्मण हो जाते हैं चोटी। देखो यहाँ से फिर चोटी। ये चोटी और ये आपस में मिलते हैं। ये नहीं मिलेगा। मिलेगा? बाजोली पहन करके देखो, तो ये मिलता है पैरों से? नहीं, माथा मिलेगा चोटी (से)। ये कितनी सीधी बात समझाने की है। तो पहले ब्राह्मण ज़रूर चाहिए और वो युग थोड़ा वो छोटा होते हैं। इसलिए छोटी कहा जाता है इनको। पढ़ते तो बहुत ही हैं। बाकी छोटा होता है और पीछे है देवता। ये भी तुम्हारे बहुत काम का है चित्र। यहाँ नहीं है शायद इस समय में; परन्तु होना चाहिए। ये बहुत ईज़ी है समझाने का विराट रूप। वैराइटी मनुष्य क्या वैराइटी रूप, तो अक्षर तो एक है; परन्तु चक्कर कितना बड़ा है। समझाने में कितना मज़ा आते हैं! तो वो भी होना चाहिए, म्यूज़ियम में या किसमें होना चाहिए। ये बाबा कहते रहते हैं ना, तो होना चाहिए। तो समझाय सकें अच्छी तरह से, बहुत अच्छी तरह से समझा सकें। जब ब्राह्मण और ब्राह्मण जब हैं तब तो सभी धर्म हैं जैसे कि। समझा ना; क्योंकि शूद्र से ब्राह्मण, वो तो सैपलिंग लगती है ना बच्ची! जैसे अभी सैपलिंग लगाते हैं तो खास झाड़ होते हैं उनकी सैपलिंग लगाते हैं। तो ये भी बाप आ करके खास सैपलिंग लगाते हैं– पहले–2 विश्व में शांति धर्म। इन जैसा शांति धर्म; सो भी सूर्यवंशी कहेंगे। हम चंद्रवंशी को भी नहीं ले जा सकते हैं स्वर्ग में, लॉ नहीं है; क्योंकि भेंट ही होती है– नर्क और स्वर्ग। इसको ही कहा जाता है वैश्यालय ठक शिवालय। ये पुरानी दुनियाँ, वो नई दुनियाँ। तो लॉ मुजीब उनकी आत्माओं में ताकत इतनी है जो अभी तलक भी देखो राज्य कर रहे हैं और इनकी ताकत इतनी कम हो गई है, देखो ये राज्य ही खत्म हो गया है एकदम। ये देखो पार्ट तो तुम बच्चों को समझाया गया है ना सभी! जो सुख बहुत देखे हैं, उनको दुःख बहुत देखना है ज़रूर। तो ये गायन है इनका कि इन जैसा गरीब, इन जैसा ये दुक्कड़ अन्न का और कोई नहीं। सबसे जास्ती भारत वो अन्न खरीद करते हैं, और कोई जगह से कोई डुक्कड़ की रड़ियाँ नहीं आती हैं। समय प्रति समय ये भारत में डुक्कड़ पड़ते आए हैं। ...दूसरा अथाह है भारत में और तुम कितने सुनते हो, कितने थोड़े–2 सैपलिंग आहिस्ते–2 लगते हैं। सैपलिंग लगाते हैं, माया का तूफान आता है, वो कोई मुरझा जाते हैं, कोई छन पड़ते हैं। तो ये झाड़ स्थापन करने में मेहनत तो लगेगी ना, और कोई धर्म में ये मेहनत नहीं होती है। समझा ना! इसलिए बाप का पार्ट है इसमें। वो बहुत मेहनत

कर सकते हैं; क्योंकि ऊँचे–ते–ऊँचा है, तो ऊँचे–ते–ऊँची मेहनत भी करनी पड़े। दूसरा क्या करते हैं? स्थापना करते हैं, तो क्या करते हैं? कुछ भी नहीं है। वो कोई सैपलिंग थोड़े ही कहेंगे, लगेगी। ये तो बच्चे समझ गए हैं कि हाँ, वहाँ सेक्शन ही इनका अलग है। वो आते हैं, उनका एक धर्म स्थापन कर, दूसरा फिर आते ही रहते हैं, आते रहते हैं, आते ही रहते हैं, आते रहते हैं और इनको इन सभी धर्म में, जो ये धर्म दूसरे–2 धर्मों में चला गया है, उनमें से ये सभी निकलने वाले हैं। ये भी एक कुदरत है ना कि वो कैसे फिर वही आएगा। सिक्ख बहुत बने हैं, मुसलमान बहुत बने। मुख्य–2 धर्म जो हैं, बड़े–2, अभी ऐसे नहीं कहते गुजराती और मराठी–फरेटी। ना, ये धर्म के ऊपर है सारा। वास्तव में गुजराती कोई धर्म नहीं है। गुजरात में रहने वाले को गुजराती कहा जाता है, यू.पी. में रहने वाले को यू.पी. कहे जाता है, पंजाब में रहने वाले को पंजाबी कहे जाए। अभी ये पंजाबी कोई धर्म नहीं है। ना! ये तो यही भारतवासी ने ही हिन्दुस्तान में रहने वाले का धर्म ही हिन्दू कह दिया है। ये एक भारत की ये भूल है बड़े–ते–बड़ी। पंजाब में रहने वाले पंजाबी, धर्म सिक्ख। यहाँ रहने वाले हिन्दुस्तान में वरी धर्म हिन्दू और ये कोई की बुद्धि में नहीं आते हैं कि ये हम क्या किया है। क्योंकि ड्रामा के प्लैन अनुसार ये धर्म ना होना है। प्रायः ना धर्म होना है इसलिए बट के, बट का झाड़ जो है, ये बड़ का बड़ा झाड़, यहाँ भी है नीचे, वो तो बिल्कुल कुछ नहीं है। उसके लिए कहा है कि देखो थुर कट जाते हैं और वो बिल्कुल सब्ज रहता है एकदम। तो मिसाल भी कितना अच्छा है और है भारत में, कलकत्ते में बनियन ट्री। वो तो जो तुम ज्ञानवान हैं ना, उनको तो अच्छी तरह से देखना चाहिए कि ये कितना कुदरती झाड़ है। कितना बड़ा उनका थुर होना चाहिए। इतना बहुत–2 बड़ा और टालियाँ देखो कितनी हैं। अरे मोटर में, बुड्ढे बिचारे पैदल नहीं कर सकते हैं, तो मोटर में बैठ करके चक्कर लगाते हैं। वण्डरफुल झाड़ है, वो देखने से...अपने इस घराने का वो भेंट हो जाता है बरोबर। हमारा जो देवी–देवता घराना, वो देखो प्रायः खलास हो, बाकी सब धर्म खड़े हैं। अभी जब फिर हमारा धर्म स्थापन होगा तो और कोई होगा ही नहीं। देखो ये भी तुम बच्चों की बुद्धि में। और कोई के भी, मनुष्यमात्र के बुद्धि में नहीं है, बल्कि तुम्हारे भी बुद्धि से निकल जाता है। जैसे बाप की याद निकल जाती है, तैसे ज्ञान की प्वॉइंट भी निकल जाती है। क्यों? स्थायी सर्विस पर नहीं हैं या सर्विस करते ही नहीं हैं बिल्कुल ही, जानते ही नहीं हैं सर्विस। तो न जानते हैं तो न सीखते हैं, न धारणा होती है। भले वो धारणा नहीं है, फिर बाकी पुरानी सभी धारणा– झगड़ा–झंटा, लटकना, गिरना, झुरना, मरना।

गीत :– धरती को आकाश पुकारे, आ जा–2! प्रेम दुआरे, आना ही होगा.....

आज गुरूवार डे, सत्गुरूवार डे है। सभी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण कुलभूषण, स्वदर्शन चक्रधारी, सर्विसेबुल बच्चों प्रति रूहानी बापदादा और मधुबन के बच्चों का यादप्यार स्वीकार करना जी और गुडमॉर्निंग। मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग।